28/10/2022

पाठ - 6

बुनकर, लोहा बनाने वाले और फैक्ट्री मालिक

प्र ⑤- रिक्त स्थान भरें -

उत्तर -(i) अंग्रेजी का शिंट्ज शब्द हिन्दी के छींट शब्द से निकलता है।
(ii) टीपू की तलवार वुट्ज स्टील से बनी थी।
(iii) भारत का कपड़ा निर्यात उन्नीसवीं सदी में गिरने लगा।

प्र ⑥- विभिन्न कपड़ो के नामों से उनके इतिहासो के बारे में क्या पता चलता है?

उत्तर -(i) मस्लिन (मलमल) :- अंग्रेज सभी बारीक बुनाई के सूती कपड़ो को मस्लिन (मलमल) कहते है। युरोपीय व्यापारियों ने भारतीय बारीक सूती कपड़ा सर्वप्रथम ईराक के मोसूल नामक शहर में अरबी व्यापारियों के पास देखा।

(ii) शिंट्ज :- जिस कपड़े पर रंग-बिरंगे, छोटे-छोटे फूल पतियों के डिजायन बने होते थे। उस कपड़े को शिंट्ज (छींट) कहते हैं।

(iii) कैलिको :- कालीकट से जुड़ा होने के कारण इसे वे 'कैलिको' कहने लगे और कालान्तर में सभी प्रकार के भारतीय सूती वस्त्रों को कैलिको कहा जाने लगा।

(iv) अन्य बहुत-सी किस्मो के कपड़े भी होते थे जो पटना, कलकत्ता, कासिम बाजार, उड़ीसा एवं चारपुर नामक स्थानो से जुड़े हुए हैं।

प्र ⑦

28/10/2022

पाठ - 6

बुनकर, लोहा बनाने वाले और फैक्ट्री मालिक

प्र① इंग्लैण्ड के ऊन और रेशम उत्पादको ने अठारहवीं सदी की शुरूआत में भारत से आयात होने वाले कपड़े का विरोध क्यों किया था?

उत्तर - इंग्लैण्ड का कपड़ा भारतीय कपड़ों से प्रतियोगिता करने में समर्थ नही था। और इंग्लैण्ड के वस्त्र निर्माता भारतीय वस्त्रों की इंग्लैण्ड में बढ़ती लोकप्रियता से चिंतित थे। अतः ब्रिटिश सरकार ने सन् 1720 में एक कानून बनाकर भारतीय छपाई वाले सूती वस्त्रों के आयात और प्रयोग पर पाबंदी लगा दी। इसे 'कैलिको अधिनियम' कहा गया।

प्र⑧ ब्रिटेन में कपास उद्योग के विकास से भारत के कपड़ा उत्पादको पर किस तरह प्रभाव पड़े?

उत्तर - (i) 1764 स्पिनिंग जैनी तथा 1786 में वाष्प के इंजन ने इस क्षेत्र में क्रान्ति ला दी। इन आविष्कारो ने भारतीय वस्त्रोत्पादको पर विपरित प्रभाव पड़ा। क्योकि नवीन तकनीक के कारण ब्रिटेन का बना कपड़ा सस्ता था। और कीमत भी कम थी।

(ii) भारतीय वस्त्रों के आयात पर भारी शुल्क लगाए जाने के कारण भारतीय वस्त्रोत्पादको को ब्रिटेन में कपड़ो के निर्यात करने में बहुत ज्यादा कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।

प्र⑨ उन्नीसवीं सदी में भारतीय लौह-प्रगलन उद्योग का पतन क्यों हुआ?

उत्तर - 19 वीं शताब्दी के मध्य तक ब्रिटेन से लौह-इस्पात भारत आने लगा। अतः भारतीय लोहारों ने उपयोगी वस्तुएँ बनाने के लिए इस आयातित लौह-इस्पात का प्रयोग करना शुरू कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि भारतीय लौह-प्रगालकों की माँग बहुत कम हो गयी।

28/10/2022

पाठ - 6

बुनकर, लोहा बनाने वाले और फैक्ट्री मालिक

प्र. ⑩ - भारतीय वस्त्र उद्योग को अपने शुरूआती सालों में किन समस्याओं से जूझना पड़ा?

उत्तर - (i) ब्रिटेन मे हुए औद्योगीकरण के कारण भारत में सूती वस्त्रों की बाढ़-सी आ गई और 1860 तक भारत में लगभग हो-तिहाई सूती वस्त्रो का उपयोग ब्रिटेन का होने लगा जिससे भारतीय सूती वस्त्र उद्योग में लगे लोग बेरोजगार हो गए।

(ii) जिससे भारतीय वस्त्र उद्योग को ब्रिटेन के वस्त्रोद्योग से प्रतिस्पर्धा करनी पड़ी और भारतीय वस्त्र उद्योग लगभग समाप्ति की कगार पर पहुँच गया।

प्र. ⑪ - पहले महायुद्ध के दौरान अपना स्टील उत्पादन बढ़ाने में टिस्को को किस बात से मदद मिली?

उत्तर - टाटा आयरन एण्ड स्टील कम्पनी (TISCO) की स्थापना सुवर्णरेखा नदी के किनारे हुई इसमें 1912 से उत्पादन शुरू हुआ। शुरू में अंग्रेज यह विश्वास नही करते थे कि भारत रेलवे लाइन बिछाने के लिए उत्तम किस्म का इस्पात तैयार कर सकता है लेकिन 1914 में प्रथम विश्वयुद्ध प्रारम्भ हो जाने के बाद ब्रिटेन का लोह-इस्पात उद्योग जो कि भारतीय रेल इस्पात की पूर्ति करता था। उसकी खपत अब युद्ध की माँगो को पूरा करने में होने लगी। जिससे भारत में रेलवे हेतु इस्पात के आयात में कमी आयी। अत: भारतीय रेलवे को अपनी इस्पात आपूर्ति हेतु टिस्को की ओर मुड़ना पड़ा और उसने शुरूआती वर्षो में ही टिस्को को अपनी उत्पादन क्षमता को बढ़ाने में मदद मिली।